Daily Gospel Reflections in Hindi

26 July 2019

मत्ती 10: 37-42

THE COST OF DISCIPLESHIP AND REWARD

आज का दौर, मन लुभावने वादों का है। सत्ता पाने की ख्याईश में हर राजनैतिक दल ऐसे हथकंडे अपनाते है। और जनता ठगी सी महसूस करती है। लेकिन प्रभु ने अपने सार्वजनिक जीवन काल के आरंभ में ही ऐलान किया कि वे क्या करने जा रहे है। ''उसने मुझे भेजा है, जिससे में दरिद्रों को...'' (Lk. 4:18,19)। साथ ही साथ साफ लहजों में चेतावनी भी दी थी कि उनके शिष्यों को क्या–क्या कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। ''जो मेरा अनुसरण करना चाहता है, वह आत्मत्याग करें, और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले'' (Mt. 16:24)। जाहिर सी बात है, प्रभु लोकलुभावन वादों से हमें ठगना नहीं चाहते।

इसी संदेश को आज के सुसमाचार पाठ में विस्तार पूर्वक दिया गया है। उनके कहे अनुसार जो अपने माता–पिता, पुत्र–पुत्रियों और खुद को प्रभु से बढ़कर चाहता है, वह प्रभु के योग्य नहीं है। इसमें और पहली आज्ञा में समानता है। ''अपने प्रभु–ईश्वर को अपने सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी बुद्धि से प्यार करो (Mt. 22:36)। पहली आज्ञा का मतलब केवल यह नहीं कि हमें देवमूर्तियों की आराधना नहीं करनी चाहिए, बल्कि यह भी, कि ईश्वर से बढ़कर और ईश्वर के बारबर, किसी व्यक्ति, वस्तु, जगह या खुद को भी प्यार नहीं करनी चाहिए।

आज के सुसामचार पाठ द्वारा, जो श्रद्धा और प्रेम ईश्वर को आरक्षित हैं, उसी श्रद्धा और प्रेम की अपेक्षा प्रभु अपने शिष्यों से करते है। यह हमारे कैथोलिक विश्वास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है। हमारे विश्वास के अनुसार प्रभु येसु, त्रिएक ईश्वर के दूसरे शकसियत के मनुष्य अवतार है। ''मैं और पिता एक है'' (Jn 10:30)।

आज के सुसमाचार पाठ के अंतिम भाग में प्रभु, जो उनके शिष्य बनते है, उनके लिए पुरस्कार की बात करते है। ''जो तुम्हारा स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है....'' (Mt.10:40)। इसमें और इब्राहीम से ईश्वर की प्रतिज्ञा में समानता पाई जाती है। ''....तुम्हें आशीर्वाद दूंगा.... जो तुम्हें आशीर्वाद देते है, मैं उन्हें आशीर्वाद दूंगा....'' (Gen.12:1-4)। इब्राहीम वह व्यक्ति है, जिसे ईश्वर ने अपना मित्र माना (Is. 41:8)। वास्तव में इब्राहीम, इस दुनिया में ईश्वर का राजदूत जैसा था, ''अब से मैं तुम्हें सेवक नहीं कहूंगा... मैं ने तुम्हें मित्र कहा है'' (Jn. 15:15)। शिष्य भी सारी दुनिया में प्रभु येसु के राजदूत बनें, जहां–जहां गये, प्रभु के संदेश को फैलाये।

अबर हम प्रभु के शिष्य है, तो हमें भी सब कुछ त्यागकर प्रभु से सारे हृदय, सारी आत्मा और सारी बुद्धि से प्रेम करना होगा और अगर हम वफादार रहें, पुरस्कर के समय प्रभु हमें स्वर्गीय पिता के सामने स्वीकार करेंगे (Mt.10:32)।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019